प्रारम्भिक सम्बोधन

माननीय सदस्यगण, सबसे पहले मैं इस सदन के सभी माननीय सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझमें विश्वास प्रकट करते हुए मुझे इस आसन पर बैठाया । उसके बाद मैं लोकतंत्र के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिसमें यह व्यवस्था है कि मेरे जैसा व्यक्ति अध्यक्ष के संवैधानिक पद पर आसीन हो सकता है। मैं यह सोचकर रोमांचित हो रहा हूँ कि हमारे संविधान निर्माताओं ने कितनी दूर तक सोचकर यह व्यवस्था की थी । बिहार विधान-सभा इस राज्य की जनता की आंकाक्षाओं का मंदिर है। संविधान निर्माताओं ने तीन स्तम्भों का प्रावधान किया था जिसमें विधायिका भी एक प्रमुख है। एक सुविचारित व्यवस्था की कि सरकार के हरेक कार्यकलाप पर विधान-सभा की नजर हो, चलते सत्र में माननीय सदस्यों द्वारा आमने-सामने सरकार को प्रश्न, ध्यानाकर्षण, शून्यकाल आदि सूचनाओं के द्वारा अवगत कराया जाता है । साथ ही, याचिका समिति जैसी अन्य समिति के माध्यम से सीधे जनता को सदन को जोड़ा गया है । बिहार विधान-सभा में प्रत्यायुक्त विधान-समिति भी है जिसे सरकार के नियम परिनियम को जांचने की शक्ति है। बिहार विधान-सभा की समितियां रिपोर्ट के माध्यम से बजटीय सिस्टम ठीक रखने और सुधार के विभिन्न उपायों से सरकार को अवगत कराकर जनहित के कामों को कराती है । स्वस्थ आलोचना और उसका प्रत्युत्तर इस सदन की गरिमा के अनुरूप है। मैंने अपने सदन के जीवन में देखा है, बहुत सारे वरीय सदस्य हैं जिनसे सीखने का मौका मिला है । जिनके नेतृत्व में हमने कदम बढ़ाया है, मुझे खुशी है कि उनके नेतृत्व में इस सदन की मर्यादा बचाने के लिए आपकी जो अपेक्षा है उस पर खड़ा उतरने का प्रयास करूंगा । मैं माननीय सदस्यों से यह भी अनुरोध करना चाहूंगा कि छोटी-छोटी बातों को तूल न देकर राज्य के विकास की बातों पर यदि ध्यान केन्द्रित करेंगे तो श्रेयस्कर होगा । मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि हमलोगों को ऐसा आचरण अपनाना चाहिए जिससे यह सदन देश के सभी राज्यों में एक उदाहरण पेश करे । चाहे जितनी भी कटु से कटु बात हो हमें उसे सुनना चाहिए और संयम तथा शालीनता से उसका उत्तर देना चाहिए ।

वैश्विक महामारी के दौर में मानव जाति संकट में पड़ी है । इस दौरान आचार-विचार, रहन-सहन कई व्यवस्थाएं बदल गयी हैं । हमलोगों के विचार को भी बदलना होगा । 21वीं सदी की दहलीज पर विकसित भारत कदम रखने के लिए तैयार है । बिहार को फिर उसी ऐतिहासिक पौराणिक वातावरण में ले जाने के लिए हम सभी सदस्यों से आग्रह करेंगे । एक नये विचार के साथ, नये सकारात्मक भाव के साथ हम कदम बढ़ायें । अध्यक्ष का कर्तव्य सभा का सुव्यवस्थित संचालन करना है इसलिए मुझे इस पर बहुत अधिक बोलने की जरूरत नहीं है । इस संवैधानिक पद का दायित्व आपलोगों ने मुझे दिया है इसके लिए मैं आप लोगों का अनुगृहीत होने के साथ ही अपने को गौरवान्वित महसूस करता हूँ । मैं सभी माननीय सदस्यों को साथ लेकर चलने की कोशिश करूंगा परन्तु आप सब जानते हैं कि सदन के संचालन के लिए बिहार विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन नियमावली गठित है । इस नियमावली के अन्तर्गत जितनी भी अपेक्षाएं आपकी होगीं उन सब को पूरा करने का मेरा भरपूर प्रयास रहेगा। परम्परा रही है कि सभी माननीय सदस्य किसी न किसी समिति के सदस्य बनाये जाते हैं, उस परम्परा का निर्वहन आगे भी होता रहेगा । मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि समिति के कार्यकलाप को पारदर्शी-दूरदर्शी बनाने हेतु समिति की रिपोर्ट के माध्यम से सरकार को सकारात्मक सुझाव देंगे ताकि बिहार की जनता की आकांक्षाओं को पूरा कर सकें । आप सभी माननीय सदस्य ने मेरे ऊपर विश्वास किया है इसके लिए एक बार फिर मैं आपलोगों का आभार व्यक्त करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ ।